Volume-I, No. 2, August-2014, pp. 125-129

डॉ0 सम्पूर्णानन्द एवं मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकता

डा.अंकुर गुप्ता, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हाशमी गर्ल्स पी0जी0 कॉलिज, अमरोहा उ.प्र. भारत।
मिस.वन्दना रानी (शोधार्थिनी, शिक्षा शास्त्र)
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला उ.प्र. भारत।

प्रस्तावना–

प्रत्येक व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ पाशविक प्रवृत्तियों सहित इस व्यापक विश्व में प्रवेश करता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रवृत्तियों का 'शोधन' एवं 'मार्गान्तीकरण' होता है। तदोपरान्त सामाजिक प्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है। लॉक ने ठीक ही कहा है– 'पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्यों का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है।'' इसी प्रकार ड्यूबी ने इस तथ्य पर जोर देते हुए लिखा है– ''जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का।'' शिक्षा ही संस्कृति तथा सभ्यता की मूल और जननी है। अतः सृष्टिकाल के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा का महत्व तथा प्रभाव भली–भांति स्वीकार किया जाता रहा है। शिक्षा की यह प्रवृत्ति पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है एवं व्यक्ति और समाज दोनों उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहते हैं। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सर्वविदित है कि सफलता पूर्णतया शिक्षा के द्वारा ही सम्भव होती है। भारत की भूमि विभिन्नताओं वाली भूमि है इस पर अनेक प्रकार की जातियाँ, भाषा, रंग–रूप, वेश–भूषा और संस्कृति विद्यमान है किन्तु अनेक विभिन्नताओं के होते हुये भी भारत में अनेकता में एकता है, इस एकता के पीछे जिस वस्तु का सहयोग है वह है शिक्षा। जो कुछ भी साधन या व्यवहार मानव के ज्ञान का विकास करें, भावनाओं व इच्छाओं का परिष्कार करें, तर्क–चिन्तन का विकास करें, वही औपचारिक व अनौपचारिक रूप से शिक्षा है।

सातवीं सदीं से लेकर उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति दयनीय होती चली गई। इसी दयनीय स्थिति से मुक्ति पाने के प्रयास में भारतीय पुनजार्गरण का प्रादुर्भाव हुआ। उन्नीसवीं सदीं में इस क्षेत्र में ऐसी अनेक विभूतियों ने जन्म लिया जो भारत के खोये हुये गौरव को प्रदान करने में सक्षम थीं। भारतीय पुनर्जागरण की ज्योति जलाने वालों में राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द विद्यासागर, केशवचन्द्रसेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, मोतीलाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, महामना मदनमोहन मालवीय, अरविन्द घोष और श्री सम्पूर्णानन्द का प्रमुख स्थान है। शिक्षा का धर्म, राजनीति और समाज से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। क्योंकि समाज और संस्कृति दोनों ही परिवर्तनशील है, इसलिये शिक्षा भी निरन्तर नवीन विचारधाराओं से प्रभावित होती रहती है। शिक्षा के स्वरूप के साथ ही उसके अर्थ व उद्देश्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। अतः विभिन्न विभूतियों जैसे– राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, मोतीलाल नेहरू, पं० मदन मोहनमालवीय, गाँधी जी व श्री सम्पूर्णानन्द ने शिक्षा के विषय में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी ने पराधीन विचारधारा में वो महत्वपूर्ण कार्य किया है जो विश्व इतिहास में एक अद्भुत घटना है। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिये आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तमोत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिये और राष्ट्र के विविध धर्मावलम्बियों में राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना शिक्षा द्वारा विकसित की जानी चाहिये। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यलाय राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु था।

सम्पूर्णानन्द जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे "व्यक्ति" के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ–साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिये दर–दर की ठोकरें न खानी पड़े। मालवीय जी की मान्यता है कि यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक और निर्जीव है। मालवीय जी शिक्षा व्यवस्था के व्यावहारिक तथा जीविकोपार्जन पर आधुनिक शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा के आमूल चूल परिवर्तन सम्बन्धी उनके अनेक विचार युग की मांग के अनुसार प्रगतिशील एवं आधुनिक हैं।

महामना मालवीय का नाम भारत के राष्ट्र निर्माताओं में बहुत ऊँचा है। यदि गाँधी के साथ किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह है पं0 मदनमोहन मालवीय का बहुत से लोगों ने उन्हें ''महर्षि'' की उपाधि से विभूषित किया था। कुछ लोगों ने उनके पुण्य दर्शनों की लालसा अभिव्यक्त की। डॉ0 हरिशंकर शर्मा ने उनकी स्तुति में इस प्रकार अपना उद्‌गार व्यक्त किया– ''पं0 महामना मदन मोहन मालवीय भारत की भव्य विभूतियों में से थे जिनकी धवल कीर्ति कौमुदी के पुण्य प्रकाश से पराधीनता पाश में पड़े हुये चिन्तन हीन स्वदेश ने अपना गौरव पहचान कर उन्नत शैल शिखर पर पहुँचाने की प्रेरणा पाई।''

अतः यह आवश्यक है कि हम वर्तमान समय में श्री सम्पूर्णानन्द जी और मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचारों को समझे तथा उनके शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करें। जिसमें उनके शैक्षिक योगदान एवं उनकी उपलब्धियों से वर्तमान शिक्षा में लाभ उठाया जा सकें।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी के शैक्षिक विचार वर्तमानकाल में शिक्षा जगत में एक नवीन प्रकाश की किरणे बिखेर सकते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है। वे सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी के शैक्षिक विचारों में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्त्री ने "डॉ॰ सम्पूर्णानन्द एवं मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकता" नामक विषय शोध अध्ययन हेतु चुना है। ताकि उनके विचारों का अध्ययन कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी महत्ता देखकर इनको अपनाया जा सके। भारत में वर्तमान काल में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है। वह विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक बनने के बजाय बाधक बन गई है। शैक्षिक मूल्य नष्ट हो गये हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसी शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जानी उचित होगी, जो सम्पूर्ण समाज को ज्ञान प्रदान करे, नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर पायें। इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में महान शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी के शैक्षिक विचार अवश्य ही उपयोगी हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

बाखे (1983) बाखे एम0एस0 के शोध प्रबन्ध ''लोक मान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन'' में लोकमान्य तिलक और स्वामी विवेकानन्द के कार्यो और गतिविधियों के आधार पर राष्ट्रीय सन्दर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। तिलक और स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्‌देश्य मनुष्य को अपने आप को पहचानने में समर्थ बनाना है। बालक अपने आप में एक वास्तविकता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति में वह सब योग्यतायें विकसित करता है और जीवन का गहन अर्थ निकलता है। शिक्षा पूर्ण वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर है।

राय, एम॰ (1986) ने अपने शोधग्रंथ "पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" में उनके शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि पंडित जी के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा होना चाहिए, विनम्रता विद्यार्थी के लिए आभूषण की तरह है तथा विद्यार्थियों में स्वअनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिये।

आनन्ता शर्मा (2000) ने महात्मा गांधी एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में दोनो महान विभूतियों के अनुसार षिक्षा के विभिन्न अंगो यथा – षिक्षा का अर्थ, उद्‌देष्य, षिक्षण विधि, षिक्षक, विद्यालय तथा षिक्षा के अन्य पक्ष यथा स्त्री षिक्षा तथा व्यवसायिक षिक्षा पर उनके विचारो का वर्णन किया तथा उनका तुलनात्मक विष्लेषण किया जिसमें उन्होंने दोनो के षैक्षिक विचारो में कुछ समानतायें तथा कुछ असमानतायें पायी।

गुप्ता, कु॰ वीना रानी (2002) ने अपने शोधग्रंथ "भारतीय समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचार व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका औचित्य (आचार्य नरेन्द्र देव एवं डॉ॰ सम्पूर्णानन्द के सन्दर्भ में)" में आचार्य नरेन्द्र देव एवं डॉ॰ सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया तथा उनके औचित्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया। शोधकर्त्री ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके शैक्षिक विचारों का औचित्य बताया है।

सिंह, प्रवीण कुमार (2007) ने अपने शोधप्रबंध "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" में समाजवादी चिन्तकों के जीवन दर्शन, शिक्षा दर्शन तथा समाज एवं संस्कृति का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, नारी शिक्षा, साक्षरता अभियान, विज्ञान, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, अनुशासन आदि विषयों पर अध्ययन किया तथा सुझाव दिये।

शर्मा, श्रीमती वीना (2009) ने अपने शोधग्रंथ "पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये।

सिंह, नवनीत कुमार (2009) ने "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता" नामक शीर्षक से

अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। प्रबंध में उन्होंने पं॰ नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ॰ सम्पूर्णानन्द तथा राम मनोहर लोहिया के शिक्षा दर्शनों का अध्ययन किया तथा अपने विचार व्यक्त किये।

श्री जे0एस0 वर्मा ने अपने शोध ग्रन्थ "आधुनिक परिवेश में महामना मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन" में मालवीय जी के आधुनिक भारत और प्राचीन भारत की समीक्षा की है।

अध्ययन के उद्देश्य–

- शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्यों पर सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के विचारों का अध्ययन करना।
- सम्पूर्णानन्द जी व मालवीय जी के जीवन व कार्यों तथा शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाना।
- सम्पूर्णानन्द जी व मालवीय जी के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
- अनुशासन एवं स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के विचारों को प्रकाश में लाना।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के शिक्षक के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी द्वारा निरूपित गुरू– शिष्य सम्बन्ध के स्वरूप का अध्ययन करना।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें–

- सम्पूर्णानन्द जी व मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शैक्षिक प्रणाली में महत्व रखते हैं।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय का व्यक्तित्व बाल एवं युवा वर्ग के चारित्रिक एवं नैतिक विकास में प्रभावी है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के विकास में महत्व रखते हैं।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा वर्णित शिक्षण विधियाँ वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा वर्णित पाठ्क्रम प्राथमिक, इण्टरमीडिएट एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी एवं व्यवसाय परक बनाने में प्रभावी है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा निरूपित गुरु–शिष्य सम्बन्ध आधुनिक भारतीय समाज के विकास में सहायक है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय द्वारा वर्णित शिक्षा वर्तमान भारतीय शिक्षा के विकास में सहायक है।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व–

सम्पूर्णानन्द जी –

सम्पूर्णानन्द जी एक महान दार्शनिक, राजनीतिज्ञ तथा नवचेतना के मूर्तिमान युगपुरुष थे। सम्पूर्णानन्द जी भारतीय इतिहास की उन गिनी चुनी महान विभूतियों में से हैं जो राष्ट्र को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। सम्पूर्णानन्द जी ऐसे चिन्तक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनमें मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने मानव जीवन के अनेकों आदर्शों एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बताये। सम्पूर्णानन्द जी ने शिक्षा पद्धति के माध्यम से आत्म–सम्मान एवं स्वाबलम्बन का पाठ पढ़ाया।

मदन मोहन मालवीय जी–

हमारे देश में समय–2 पर अनेकों महापुरुषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में महामना जी का नाम भी सूर्य की भांति चमकता है। मदनमोहन मालवीय जी बीसवीं शताब्दी के एक महान दार्शनिक समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, धार्मिक सुधारक के साथ–2 महान शिक्षाशास्त्री भी थे। महामना जी का शिक्षा दर्शन तत्व मीमांसीय एवं ज्ञान मीमांसीय दोनों ही दृष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने नैतिक जगत के साथ यथार्थ सत्ता, ब्रहम के ज्ञान को भी अपनी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। महामना जी ने संसार के भौतिक एवं वैज्ञानिक विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। मदनमोहन मालवीय जी की विचारधारा तत्कालीन सामाजिक जरूरत के अनुसार शिक्षा के कुछ उद्देश्य निश्चित किये जा निम्नवत् है–

- चारित्रिक विकास का उद्देश्य
- स्वराज प्राप्ति का उद्देश्य
- विश्वबन्धुत्व का उद्देश्य
- प्राचीन शिक्षा की रक्षा एवं भौतिकवाद से समन्वय का उद्देश्य
- उद्योगों के विकास का उद्देश्य
- मातृभाषा के प्रयोग का उद्देश्य

समस्या का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध में सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने को प्रयास किया जायेगा। यह शोध अध्ययन सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, शिक्षक, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, जन शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही परिसीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया–

वर्तमान अध्ययन मूल रूप से डॉ॰ सम्पूर्णानन्द एवं मदन मोहन मालवीय के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य और शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया है।

समस्या कथन–

"डॉ॰ सम्पूर्णानन्द एवं मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकता।"

शोध विधि का चयन–

ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बडा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए है कि इसके द्वारा ही आज प्रचलित शैक्षिक परिपाटियों का उद्‌गम कैसे हुआ? किसी उच्च कोटि की शैक्षिक संस्था ने विकास कैसे किया? विगत में अपनायी गयी बहुत सी शैक्षिक नीतियों के क्या परिणाम रहे? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है और उनका प्रति उत्तर ऐतिहासिक अनुसंधान से ही मिल सकता है।

सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के भाषण तथा रचनाओं के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के प्रयोगात्मक आधार पर शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए नियोजित किया गया है। सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी का शिक्षा दर्शन अतीत में उनके द्वारा रचित रचनाओं तथा उनके शिक्षा दर्शन पर आधारित अन्य लेखकों के ग्रन्थों, पत्र पत्रिकाओं में दृष्टिगोचर होता है। ये सभी ग्रन्थ ऐतिहासिक स्रोत से सम्बन्धित है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया है।

चूंकि समय तथा शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी पर संपूर्ण विषय सामग्री को सम्मिलित करना संभव नहीं है। इसलिए प्रस्तुत शोध में सम्पूर्णानन्द जी एवं मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों पर आधारित चुनिंदा, पुस्तकों, पत्रों, भाषणों एवं लेखों का प्रयोग अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया गया है।

तथ्यों का संकलन–

इसमें निम्न साधन व स्रोतों को प्रयोग में लाया गया है–

(क) प्राथमिक स्रोत– इसके लिए सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय जी कृत साहित्य का अध्ययन करना।

(ख) द्वितीय स्रोत– सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय जी के जीवन दर्शन पर अन्य लेखकों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन करना।

तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष –

सम्पूर्णानन्द जी एवं मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचारों का भारत की वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से गहनता से विवेचनात्मक अध्ययन किया गया तथा यह पाया गया कि सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी का जीवन–दर्शन एवं शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत, गहन, गम्भीर तथा सूक्ष्म है। शोधकर्ता ने अपने शोध के अध्ययन के उपरान्त जो निष्कर्ष निकाले हैं वे इस प्रकार से हैं–

- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षा पर भी बल दिया है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ हस्त कौशल की महत्ता पर बल देते हुए हस्त कौशल को बेरोजगारी से बचने का सबसे अच्छा साधन माना है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने धार्मिक शिक्षा को बहुत महत्वूपर्ण माना है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने स्त्री–शिक्षा पर अत्यन्त जोर दिया तथा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा को आवश्यक माना है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने जन शिक्षा पर बल देते हुये निःशुल्क शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय–प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी ने गुरू और शिष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों का होना आवश्यक बताया है, और कहा है कि शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति तथा सत्य–निष्ठ आचरण करने वाला होना चाहिए।
- सम्पूर्णानन्द जी एवं महामना जी शिक्षा का एक मात्र उद्‌देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।

सन्दर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, सीता राम, महामना पं० मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी–1936.
2. ए॰एस॰ अल्तेकर, महामना पं० मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी–1936.
3. डॉ० दुबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
4. प्रसाद, वैधनाथ, विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
5. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– यूनिवर्सिटी ऑटोनामी एण्ड एजूकेशन रिफोर्म) जनवरी 1959.
6. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द, थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– आर्ट एण्ड आर्टिस्ट) जनवरी 1959.
7. डॉ॰ सम्पूर्णानन्द, थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख– एन इम्पोर्टेंट क्वेशचन) जनवरी 1959.
8. लाल, मुकुट बिहारी, महामना मदनमोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी 1978.
9. मिश्र, आत्मानन्द, महामना मदनमोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी 1978.
10. एम॰बी॰ बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1983–88, वाल्यूम–1 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1991)
11. एम॰बी॰ बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1988–92, वाल्यूम–2.
12. मालवीय पदमकान्त मालवीय जी के लेख वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
13. पाण्डेय, राम शक्ल, मालवीय जी के लेख वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।